पाँचवाँ	500	1500
छठा	600	1800
सातवाँ	700	2100
आठवाँ	800	2400
नवाँ	900	2700
दसवाँ	1000	3300
ग्यारहवाँ	1100	3300
बारहवाँ	1200	3600
तेरहवाँ	1300	3900

नोटः –

1. हरे चारे की मात्रा चारे की प्रौढ़ता के अनुसार घटती – बढ़ती रहेगी। यह मात्रा 20 प्रतिशत शुष्क पदार्थ के आधार पर दिया गया है।
2. दलहनी चारा उपलब्ध होने पर प्रारंभिक खाद्य मिश्रण में 20 प्रतिशत मक्के, गेहूँ या जौ का दलिया मिश्रित कर देना चाहिए या 15 प्रतिशत शीरा मिश्रित कर देना चाहिए।

6. तीन माह की आयु के बाछा – बाछी की खुराक

3 माह की आयु में बाछा – बाछी पर्याप्त मात्रा में चारा खाकर जुगाली करना सीख जाते हैं। अतः 3 माह की आयु की बाछी को धीरे – धीरे दूध छुड़ा देना चाहिए और उसे हरा चारा व दाना देना चाहिए। दाने के मिश्रण में कम से कम 12 – 13 प्रतिशत तक प्रोटीन की मात्रा अवश्य होनी चाहिए। ऐसी बाछी को एक – दो किलोग्राम दाना प्रतिदिन देना चाहिए।

आलेख
डा. शिवानी कटोच डा. दिवेश ठाकुर एवं डा. आलोक शर्मा
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
चौ. स. कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय

Printed At : Cosika Graphics & Printers, Palampur. Phone 9418044384

प्रसार पत्रक क्रमांक – 4

नवजात शिशु का संतुलित आहार

सौजन्य से
National Agricultural Innovation Project on Biodiversity
जैव विविधता
राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर 176 062

पशु प्रसव के बाद मादा द्वारा शिशु को जन्म दिया जाता है। शिशु को जन्म के 2 घण्टे के अन्दर फेनुस अवश्य पिलाना चाहिए।

1. खीस या फेनुस क्या है?

बछडा/बछडी के जन्म के तुरन्त बाद ही माँ के थनों से जो पहला पीले रंग का गाढ़ा दुध निकलता है उसे कोलस्ट्रम या खीस अथवा फेनुस कहते हैं। यह दुधारू पशु के नवजात शिशु को पिलाना अति आवश्यक है, क्योंकि इसमें बीमारियों से लड़ने के ऐसे तत्व विद्यमान होते हैं जो कि नवजात बछडा/बछडी को संक्रामक रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करते हैं। उनमें प्रतिरक्षा शक्ति की क्षमता बढ़ जाती है तथा आये दिन की पेट व संक्रामक रोगों की परेशानियों से बचे रहते हैं।

2. फेनुस क्यों पिलायें?

1. जन्म के तुरन्त बाद, नवजात शिशु को प्रतिरोधक प्रोटीन (गामा ग्लोब्युलिन) माँ के फेनुस से प्राप्त होता है। ये प्रतिरोधक प्रोटीन अमाशय से बहुत जल्दी अवशोषित होकर, खून में प्रवेश कर बछडा/बछडी को कई प्रकार की बीमारियों से लड़ने की क्षमता प्रदान करते हैं।
2. प्रतिरोधक क्षमता के अलावा फेनुस बहुत ही पौष्टिक तथा पाचक होता है। खीस/फेनुस में ऐसे भी तत्व होते हैं, जो पाचन क्रिया को संतुलित रखते हैं तथा बछडा/बछडी के प्रथम मल (गोबर) को निकालने में सहयोग करते हैं।
3. फेनुस साधारण दूध से एकदम भिन्न होता है। इसमें प्रोटीन 20.3 प्रतिशत होता है जो कि साधारण दूध से लगभग सात गुना अधिक होता है। साथ ही इसमें वसा की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत होने से फेनुस में विटामिन ए की मात्रा से सामान्य दूध से 10 गुना अधिक होती है जो नवजात शिशु को स्वस्थ रखने में सहायता करते हैं।

1. फेनुस कब और कैसे पिलायें?

पशु पालकों को चाहिए कि गाय व भैंस द्वारा जन्म देने के 1-2 घण्टे के भीतर फेनुस को या तो निकालें अथवा बच्चे को थन (छीमी) के पास ले जाकर थन (छीमी) को धीरे-धीरे उसमें मुँह में देकर चूसना सिखाएँ और बारी-बारी से चारों थनों (छीमियों) से दूध चुसवाएँ एवं बची हुई फेनुस को साफ बर्तन में निकालें।

4. फेनुस उपलब्ध ना होने पर क्या करें?

कभी-कभी किसी कारणवश जैसे गाय के बीमार होने पर या अकस्मात मर जाने पर या थन (छीमी) पर चोट आने पर नवजात बछडा/बछडी को यदि सीधे थनों (छीमियों) से फेनुस उपलब्ध न हो सके तो दूसरी गाय व भैंस की फेनुस पिलानी चाहिए। ऐसी अवस्था में जब बच्चे को माँ से अलग करें तो बोतल व बर्तन से फेनुस व दूध निकाल कर तुरन्त पिला दें। फेनुस को चौड़े बर्तन में लें। धीरे-धीरे फेनुस के पास ले जाएँ। जब बच्चे का मुँह फेनुस की सतह को छूने, लगे, तब अँगुली को भी फेनुस में डुबा दें। बाछा तो अँगुली चूसेगा, किन्तु उसके साथ ही फेनुस भी उसके मुँह में जाने पर वह तेजी से चूसना शुरू करता है तथा जल्दी ही पी जाता है। यदि किसी अन्य पशु को फेनुस भी शिशु के लिए उपलब्ध न हो तो उसके स्थान पर पशुचिकित्सक की राय से पूरक आहार देना चाहिए।

5. जन्म के एक सप्ताह बाद बछडा/बछडी का पोषण

नवजात शिशु को जन्म लेते ही या दो दिनों तक माँ के थन (छीमी) से खीस (फेनुस) पिलाने के बाद अलग करके दूध पिलाने के साथ, प्रारंभिक आहार और चारा खाने को दें। अधिक सक्रिय होने के कारण शिशु को केवल 9 सप्ताह तक ही दूध पिलाने की आवश्यकता पड़ती है। इनको जन्म से 4 सप्ताह की आयु तक शरीर भार का 10 प्रतिशत, 5-6 सप्ताह की आयु तक 7 प्रतिशत और उसके बाद क्रमशः घटाकर नवें सप्ताह में दूध पिलाना बन्द कर दें। दूसरे से तेरहवें सप्ताह तक बछड़े-बछिया (बाछा-बाछी) को निम्नलिखित तालिका के अनुसार खाद्य मिश्रण व चारा दें।

नवजात बछडा/बछडी हेतु राशन की मात्रा

बछडा/बछडी की आयु (सप्ताह)	प्रारंभिक खाद्य मिश्रण (ग्राम/दिन)	हरा चारा (ग्राम/दिन)
दूसरा	50	500
तीसरा	100	900
चौथा	300	900